

精品

从探源溯流中体会中华文化的博大精深
从精彩故事里获得受用一生的学识智慧

朱立春◎主编

成语是中国汉语言文化中的璀璨明珠，是传承中华文明的重要纽带。其相关的故事，将政治军事、日常生活、文学艺术、文化习俗、道德风尚等浓缩成一个个深刻隽永的片段，集中展现了古人的人生智慧和思想光芒，值得今人认真学习品味。



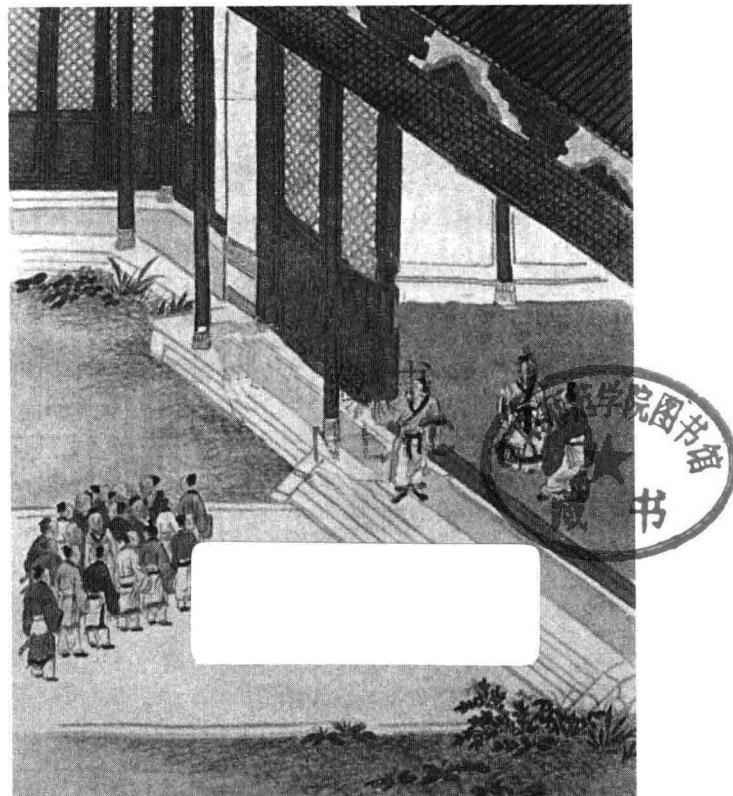
中华成语故事



北京联合出版公司
Beijing United Publishing Co.,Ltd.

中华成语故事

朱立春 主编



北京联合出版公司
Beijing United Publishing Co.,Ltd.

图书在版编目 (CIP) 数据

中华成语故事 / 朱立春主编. —北京：北京联合出版公司，
2013.7

ISBN 978-7-5502-1732-4

I . ①中… II . ①朱… III. ①汉语—成语—故事—通俗读物
IV. ①H136.3—49

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2013) 第 164230 号

中华成语故事

主 编：朱立春

责任编辑：王 巍

封面设计：异 一

版式设计：王明贵

责任校对：朱立春

美术编辑：北京东方视点数据技术有限公司

北京联合出版公司出版

(北京市西城区德外大街 83 号楼 9 层 100088)

三河市中晟雅豪印务有限公司 新华书店经销

字数 480 千字 787 毫米×1092 毫米 1/16 25.5 印张

2013 年 9 月第 1 版 2013 年 9 月第 1 次印刷

ISBN 978-7-5502-1732-4

定价：29.80 元

未经许可，不得以任何方式复制或抄袭本书部分或全部内容

版权所有，侵权必究

本书若有质量问题，请与本公司图书销售中心联系调换。电话：010-58815821

前言

成语是中国汉语言文化中的一朵亮丽奇葩。在浩如烟海的典籍中，成语作为语言的精华、文明的积淀、历史的缩影、智慧的结晶，成为传承中华文明的重要纽带。历经漫长的岁月变迁，在典籍文献中，在人们的口口相传下，成语不断地产生、发展和演变，并逐步走向成熟。大到治国安邦，小到个人处世，中华五千年的历史文化，无不在一个个简短的成语中得到了充分体现。

时至今日，大量成语仍然在现代人的行文中被广泛使用，散发着永恒的魅力。在写诗作文中，若恰当运用成语，可以使作品熠熠生辉；在说话、议论中，恰当地运用成语，则可以增强说话、论证的说服力和感染力。因此，熟练掌握和运用成语，不仅能达到言简意赅、字少情长的语言功效，同时也是衡量一个人的文字功底、文化素养以及语言表述能力的重要标尺。

学习成语，若从生动有趣的故事入手，则有寓教于乐、事半功倍之效。阅读成语最原始的故事，了解它的来龙去脉，不仅可以感受故事的精彩，也有助于加深对历史文化的理解，增强学习的趣味。成语背后的故事或大气磅礴，或快乐活泼；或血雨腥风，或诙谐幽默；或振聋发聩，或润物无声……它们将古代中国的政治军事、日常生活、文学艺术、文化习俗、道德风尚和理想志趣等浓缩成一个个深刻隽永的片段，集中展现了古人的人生智慧和思想光芒。

本书收录了 1000 多则成语故事，既注重知识性，又兼顾趣味性和实用性。根据成语所包含的不同含义，将其分门别类，分成国计民生篇、战略战术篇、智谋韬略篇、巧谏高论篇、世相百态篇、品格节操篇、奋斗践行篇、人生况味篇、士林趣话篇、奇闻异事篇等。除了讲述故事，更点明每条成语的出处并准确释义，让读者既明其义、会使用，又知其源，了解其中所蕴含的丰富文化内涵。

全书搜罗宏富，出处广博，可谓触及了几乎所有的历史文化典籍，经史子集无所不包，令读者眼界大开。所有故事虽系摘选，但皆独立成篇，使读者对成语

的由来一目了然。故事的可读性强，使读者能于兴致盎然中轻松获益。当然，也可将本书作为工具书查阅，可谓一册在手，中华成语故事全掌握。

今天，作为汉语言文化中的璀璨明珠，成语与人们的工作生活及个人成长仍须臾不可分。让我们翻开本书，一起走进成语故事的清雅世界，去品味中华语言文化的博大精深和妙趣横生吧。





目 录

• 国计民生篇 •

| | | | |
|-----------|----|-----------|----|
| 一鸣惊人 | 2 | 归马放牛 | 11 |
| 一匡天下 | 2 | 令行禁止 | 11 |
| 一言九鼎 | 3 | 付之一炬 | 12 |
| 一言为重百金轻 | 3 | 立锥之地 | 12 |
| 一言兴邦，一言丧邦 | 4 | 民为邦本 | 12 |
| 十羊九牧 | 4 | 民不聊生 | 13 |
| 人人自危 | 4 | 民无噍类 | 13 |
| 人心所向 | 5 | 民以食为天 | 14 |
| 人浮于事 | 5 | 同仇敌忾 | 14 |
| 三户亡秦 | 6 | 网开三面 | 14 |
| 三顾茅庐 | 6 | 多难兴邦 | 15 |
| 三衅三沐 | 7 | 安国之道，先戒为宝 | 15 |
| 与民同乐 | 7 | 庆父不死，鲁难未已 | 16 |
| 不得人心 | 7 | 防民之口，甚于防川 | 17 |
| 不可救药 | 8 | 近悦远来 | 17 |
| 不教而诛 | 8 | 社鼠猛狗 | 18 |
| 为富不仁 | 8 | 金瓯无缺 | 18 |
| 分崩离析 | 9 | 视民如子 | 19 |
| 开源节流 | 9 | 放虎归山 | 19 |
| 水深火热 | 10 | 驷马难追 | 20 |
| 功亏一篑 | 10 | 怨声载道 | 20 |
| 以人废言 | 11 | 哀鸿遍野 | 21 |
| | | 举足轻重 | 21 |
| | | 神州陆沉 | 22 |

| | | | |
|------------|----|-------|----|
| 唇亡齿寒 | 22 | 先下手为强 | 39 |
| 晏开之警 | 23 | 水火不相容 | 39 |
| 离心离德 | 23 | 时移事改 | 40 |
| 家有敝帚，享之千金 | 24 | 图谋不轨 | 40 |
| 得不酬失 | 24 | 贪财好色 | 41 |
| 矫枉过正 | 25 | 虽死犹生 | 41 |
| 鹿死谁手 | 25 | 临深履薄 | 42 |
| 量入为出 | 26 | 临危自计 | 42 |
| 赏罚分明 | 26 | 重蹈覆辙 | 43 |
| 一不做二不休 | 27 | 秋风过耳 | 43 |
| 三人成虎 | 27 | 亲痛仇快 | 44 |
| 三十六计，走为上计 | 28 | 迷途知返 | 44 |
| 大逆不道 | 28 | 党同伐异 | 44 |
| 大功毕成 | 29 | 监守自盗 | 45 |
| 大失所望 | 29 | 舐糠及米 | 45 |
| 才疏意广 | 29 | 称王称霸 | 46 |
| 及锋而试 | 30 | | |
| 飞沙转石 | 30 | | |
| 不能自拔 | 31 | | |
| 不越雷池一步 | 31 | 一发千钧 | 48 |
| 不谋而同 | 32 | 一以当十 | 48 |
| 心怀叵测 | 32 | 一衣带水 | 48 |
| 以古非今 | 32 | 一鼓作气 | 49 |
| 冲锋陷阵 | 33 | 一败涂地 | 50 |
| 东窗事发 | 33 | 八攻八克 | 50 |
| 生生世世 | 34 | 八面威风 | 50 |
| 司马昭之心，路人皆知 | 34 | 人微权轻 | 51 |
| 发蒙振落 | 35 | 万众一心 | 51 |
| 百无聊赖 | 35 | 土崩瓦解 | 52 |
| 权宜之计 | 36 | 马首是瞻 | 52 |
| 仰人鼻息 | 37 | 千军万马 | 53 |
| 成也萧何，败也萧何 | 37 | 不自量力 | 53 |
| 自相鱼肉 | 38 | 不翼而飞 | 53 |
| 先入为主 | 38 | 天之骄子 | 54 |

· 战略战术篇 ·

| | | | |
|-----------|----|-----------|----|
| 无人之境 | 54 | 按兵不动 | 70 |
| 止如斩足，行如流水 | 55 | 草木皆兵 | 70 |
| 长驱直入 | 55 | 甚嚣尘上 | 71 |
| 从天而降 | 56 | 背水一战 | 71 |
| 计日可待 | 56 | 星驰电发 | 72 |
| 以逸待劳 | 57 | 首尾相救 | 72 |
| 出奇制胜 | 57 | 前徒倒戈 | 73 |
| 号令如山 | 58 | 骄兵必败 | 73 |
| 四面楚歌 | 58 | 破釜沉舟 | 74 |
| 生灵涂炭 | 59 | 乘胜逐北 | 74 |
| 用兵如神 | 59 | 疾风扫落叶 | 74 |
| 外强中干 | 60 | 唯命是从 | 75 |
| 机不可失 | 60 | 偃旗息鼓 | 75 |
| 尔虞我诈 | 60 | | |
| 师直为壮 | 61 | | |
| 师出无名 | 61 | 一代楷模 | 78 |
| 各自为政 | 62 | 二者必居其一 | 78 |
| 先声夺人 | 62 | 卜昼卜夜 | 78 |
| 如临大敌 | 63 | 人心如面 | 79 |
| 如鸟兽散 | 63 | 大旱云霓 | 79 |
| 迅雷不及掩耳 | 64 | 大材小用 | 80 |
| 决一雌雄 | 64 | 万事俱备，只欠东风 | 80 |
| 劳师袭远 | 64 | 干戈化玉帛 | 81 |
| 声东击西 | 65 | 尸居余气 | 81 |
| 兵贵神速 | 65 | 不遗余力 | 82 |
| 兵不血刃 | 66 | 无可奈何 | 82 |
| 初生之犊不畏虎 | 66 | 毛皮之附 | 83 |
| 势如破竹 | 66 | 从善如流 | 83 |
| 罗雀掘鼠 | 67 | 风马牛不相及 | 84 |
| 所向风靡 | 67 | 多行不义必自毙 | 84 |
| 知难而退 | 68 | 为虺弗摧，为蛇若何 | 85 |
| 变化无方 | 68 | 尺寸之功 | 85 |
| 艰难险阻 | 69 | 目不见睫 | 85 |
| 孤注一掷 | 69 | | |

• 智谋韬略篇 •

| | | | |
|---------|-----|---------|-----|
| 四分五裂 | 86 | 釜底抽薪 | 103 |
| 百不当一 | 86 | 高枕无忧 | 103 |
| 有恃无恐 | 87 | 推心置腹 | 104 |
| 共为唇齿 | 87 | <hr/> | |
| 曲突徙薪 | 88 | ·世相百态篇· | |
| 回天之力 | 88 | <hr/> | |
| 杀一儆百 | 89 | 一蛇吞象 | 106 |
| 行百里者半九十 | 89 | 一网打尽 | 106 |
| 先礼后兵 | 90 | 一字千金 | 106 |
| 先发制人 | 90 | 一饭之报 | 107 |
| 并日而食 | 91 | 三缄其口 | 107 |
| 兴师动众 | 91 | 亡戟得矛 | 107 |
| 如火如荼 | 92 | 不可多得 | 108 |
| 好整以暇 | 92 | 不名一钱 | 108 |
| 杜口裹足 | 93 | 为人作嫁 | 109 |
| 束手就擒 | 93 | 以貌取人 | 109 |
| 远交近攻 | 94 | 东涂西抹 | 110 |
| 围魏救赵 | 94 | 未可厚非 | 110 |
| 坚壁清野 | 95 | 打草惊蛇 | 110 |
| 何足挂齿 | 95 | 目不识丁 | 111 |
| 坐山观虎斗 | 96 | 白首同归 | 111 |
| 兵不厌诈 | 96 | 饥寒交迫 | 112 |
| 奇货可居 | 97 | 市道之交 | 112 |
| 所向无敌 | 97 | 死灰复燃 | 112 |
| 相得甚欢 | 98 | 有天没日 | 113 |
| 急人之困 | 98 | 曲高和寡 | 113 |
| 独当一面 | 98 | 光彩夺目 | 114 |
| 前功尽弃 | 99 | 杀鸡骇猴 | 114 |
| 闻雷失箸 | 99 | 先斩后奏 | 115 |
| 神机妙算 | 100 | 后顾之忧 | 115 |
| 养虎遗患 | 101 | 如坐针毡 | 115 |
| 退避三舍 | 101 | 好丑自彰 | 116 |
| 乘虚而入 | 102 | 投鼠忌器 | 116 |
| 借箸代筹 | 102 | 吠非其主 | 117 |

| | | | |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 身轻言微 | 117 | 门可罗雀 | 133 |
| 言不二价 | 118 | 马齿徒增 | 133 |
| 怀璧其罪 | 118 | 不堪回首 | 133 |
| 改弦易辙 | 118 | 牛衣对泣 | 134 |
| 弃璧负婴 | 119 | 今朝有酒今朝醉 | 134 |
| 直言贾祸 | 120 | 今是昨非 | 135 |
| 罔上虐下 | 120 | 生离死别 | 135 |
| 苛政猛于虎 | 121 | 古调不弹 | 135 |
| 金玉其外，败絮其中 | 121 | 冬日可爱 | 136 |
| 狐奔鼠窜 | 122 | 曳尾涂中 | 136 |
| 法出多门 | 122 | 华亭鹤唳 | 137 |
| 炙手可热 | 122 | 华屋山丘 | 137 |
| 神采英拔 | 123 | 沧海一粟 | 137 |
| 结驷连骑 | 123 | 沧海横流 | 138 |
| 莫逆之交 | 124 | 鱼游釜中 | 138 |
| 乘肥衣轻 | 124 | 相濡以沫 | 138 |
| 宾客盈门 | 124 | 南柯一梦 | 139 |
| 掉臂不顾 | 125 | 春风风人，夏雨雨人 | 139 |
| 剜肉补疮 | 126 | 胯下之辱 | 140 |
| 虚张声势 | 126 | 乘车戴笠 | 140 |
| 集苑集枯 | 126 | 疾风知劲草 | 140 |
| 销声匿迹 | 127 | 望门投止 | 141 |
| 路不拾遗 | 127 | 惩羹吹齑 | 141 |
| 攀龙附凤 | 127 | | |

· 远见卓识篇 ·

· 人生况味篇 ·

| | |
|---------|-----|
| 一枕黄粱 | 130 |
| 八百孤寒 | 130 |
| 九死一生 | 130 |
| 力不从心 | 131 |
| 人言可畏 | 131 |
| 三折其肱 | 132 |
| 山雨欲来风满楼 | 132 |

| | |
|-----------|-----|
| 一曝十寒 | 144 |
| 一毛不拔 | 144 |
| 十年树木，百年树人 | 144 |
| 卜宅卜邻 | 145 |
| 三思而行 | 145 |
| 大器晚成 | 145 |
| 与人为善 | 146 |
| 上医医国 | 146 |

| | | | |
|-----------|-----|----------------|-----|
| 门墙桃李 | 147 | 堤溃蚁穴 | 162 |
| 不平则鸣 | 147 | 数典忘祖 | 162 |
| 天下无敌 | 148 | | |
| 车水马龙 | 148 | ·奇闻异事篇· | |
| 太丘道广 | 148 | 一身是胆 | 164 |
| 乌合之众 | 149 | 一箭双雕 | 164 |
| 方枘圆凿 | 149 | 一挥而就 | 164 |
| 为渊驱鱼，为丛驱雀 | 150 | 一目十行 | 165 |
| 以火救火 | 150 | 一发破的 | 165 |
| 以邻为壑 | 150 | 七步之才 | 165 |
| 心腹之患 | 151 | 入木三分 | 165 |
| 功成不居 | 151 | 大笔如椽 | 166 |
| 出类拔萃 | 152 | 万马齐喑 | 166 |
| 发踪指示 | 152 | 下笔成章 | 167 |
| 生死存亡 | 153 | 千变万化 | 167 |
| 同类相求 | 154 | 才气无双 | 167 |
| 任劳任怨 | 154 | 不知所终 | 168 |
| 当头棒喝 | 155 | 天下无双 | 168 |
| 争先恐后 | 155 | 天马行空 | 169 |
| 负重致远 | 155 | 太公钓鱼，愿者上钩 | 169 |
| 安不忘危，治不忘乱 | 156 | 毛遂自荐 | 169 |
| 冰山难靠 | 156 | 分庭抗礼 | 170 |
| 拒人于千里之外 | 157 | 双管齐下 | 171 |
| 每况愈下 | 157 | 布衣之交 | 171 |
| 运斤成风 | 158 | 四体不勤，五谷不分 | 171 |
| 迎刃而解 | 158 | 百发百中 | 172 |
| 歧路亡羊 | 158 | 百锻千炼 | 172 |
| 知彼知己 | 159 | 耳视目听 | 173 |
| 南风不竞 | 159 | 赤膊上阵 | 173 |
| 待时而动 | 160 | 危在旦夕 | 173 |
| 聊以卒岁 | 160 | 志在四方 | 174 |
| 虚与委蛇 | 160 | 余音绕梁 | 174 |
| 惊弓之鸟 | 161 | 牢不可破 | 175 |
| 塞翁失马，安知非福 | 161 | | |

| | | | |
|------|-----|-----------|-----|
| 沧海遗珠 | 175 | 惜墨如金 | 190 |
| 纸醉金迷 | 175 | 超群绝伦 | 190 |
| 初出茅庐 | 176 | 蛟龙得水 | 191 |
| 鸡鸣狗盗 | 176 | 屡见不鲜 | 191 |
| 拨云见日 | 177 | 锣鼓喧天 | 192 |
| 挂冠而去 | 177 | 截发留宾 | 192 |
| 图穷匕见 | 178 | <hr/> | |
| 贪天之功 | 178 | • 士林趣话篇 • | |
| 视同儿戏 | 178 | <hr/> | |
| 空前绝后 | 179 | 一鳞半爪 | 194 |
| 学富五车 | 179 | 一时之秀 | 194 |
| 放荡不羁 | 180 | 一字之师 | 195 |
| 貫虱穿杨 | 180 | 一登龙门，身价十倍 | 195 |
| 相顾失色 | 181 | 入室操戈 | 195 |
| 南冠楚囚 | 181 | 儿女情长 | 196 |
| 南州冠冕 | 182 | 之乎者也 | 196 |
| 赴汤蹈火 | 182 | 工力悉敌 | 196 |
| 响遏行云 | 183 | 不识之无 | 197 |
| 鬼斧神工 | 183 | 不觉技痒 | 197 |
| 独步天下 | 184 | 不求甚解 | 197 |
| 前无古人 | 184 | 开卷有益 | 198 |
| 济时拯世 | 185 | 见不逮闻 | 198 |
| 莫测高深 | 185 | 见猎心喜 | 198 |
| 起死回生 | 185 | 牛刀小试 | 199 |
| 倚马可待 | 186 | 户限为穿 | 199 |
| 料敌如神 | 186 | 方寸之地 | 199 |
| 笔走龙蛇 | 187 | 水落石出 | 200 |
| 谈言微中 | 187 | 文人相轻 | 200 |
| 排山压卵 | 188 | 未能免俗 | 201 |
| 著作等身 | 188 | 东山再起 | 201 |
| 虚左以待 | 189 | 出人头地 | 202 |
| 唾面自干 | 189 | 百废俱兴 | 202 |
| 悬河泻水 | 189 | 多多益善 | 203 |
| 假手于人 | 190 | 自惭形秽 | 203 |

| | | | |
|-------|-----|-----------|-----|
| 后起之秀 | 203 | 旗亭画壁 | 217 |
| 问一得三 | 204 | 管中窥豹 | 217 |
| 如泣如诉 | 204 | <hr/> | |
| 汗流浃背 | 205 | 一诺千金 | 220 |
| 近水楼台 | 205 | 一笔勾销 | 220 |
| 穷途之哭 | 205 | 人死留名 | 221 |
| 其貌不扬 | 206 | 人中之龙 | 221 |
| 咄咄怪事 | 206 | 人溺己溺，人饥己饥 | 221 |
| 空洞无物 | 207 | 三省吾身 | 222 |
| 拾人牙慧 | 207 | 大公无私 | 222 |
| 标新立异 | 207 | 大义灭亲 | 223 |
| 哄堂大笑 | 208 | 千虑一得 | 223 |
| 食言而肥 | 208 | 上行下效 | 224 |
| 独步一时 | 208 | 门无杂宾 | 224 |
| 闻一知十 | 209 | 小鸟依人 | 224 |
| 闻所未闻 | 209 | 马革裹尸 | 225 |
| 顾曲周郎 | 210 | 不拘小节 | 225 |
| 洛阳纸贵 | 210 | 不屈不挠 | 226 |
| 捉襟见肘 | 210 | 不欺地下 | 226 |
| 载酒问字 | 211 | 不欺暗室 | 227 |
| 胸有成竹 | 211 | 不耻下问 | 227 |
| 乘兴而来 | 212 | 天真烂漫 | 227 |
| 离群索居 | 212 | 无所适从 | 228 |
| 谈辞如云 | 212 | 开诚布公 | 228 |
| 旁若无人 | 213 | 气壮山河 | 229 |
| 掷地有声 | 213 | 甘之如饴 | 229 |
| 萍水相逢 | 213 | 礼贤下士 | 230 |
| 野火烧不尽 | 214 | 百折不挠 | 230 |
| 梁上君子 | 214 | 老当益壮 | 231 |
| 渐入佳境 | 215 | 朴素无华 | 232 |
| 寄人篱下 | 215 | 有备无患 | 232 |
| 赏奇析疑 | 216 | 杀身成仁 | 232 |
| 铺锦列绣 | 216 | | |
| 满城风雨 | 216 | | |

· 品格节操篇 ·

| | |
|---------|-----|
| 众醉独醒 | 233 |
| 闭关却扫 | 233 |
| 先忧后乐 | 234 |
| 守口如瓶 | 234 |
| 衣不解带 | 234 |
| 尽忠报国 | 235 |
| 尽心尽力 | 235 |
| 好善嫉恶 | 236 |
| 两袖清风 | 236 |
| 克己奉公 | 237 |
| 还淳反朴 | 237 |
| 别无长物 | 237 |
| 身先士卒 | 238 |
| 坐怀不乱 | 238 |
| 肝脑涂地 | 239 |
| 言无不尽 | 239 |
| 言必信，行必果 | 239 |
| 纷至沓来 | 240 |
| 松筠之节 | 240 |
| 披荆斩棘 | 241 |
| 奋不顾身 | 241 |
| 舍生取义 | 242 |
| 视死如归 | 242 |
| 诟如不闻 | 243 |
| 挺身而出 | 243 |
| 闻过则喜 | 243 |
| 威武不屈 | 244 |
| 轻财重义 | 244 |
| 轻财好施 | 245 |
| 浑金璞玉 | 245 |
| 洁己爱人 | 246 |
| 洗耳恭听 | 246 |
| 绝口不道 | 246 |
| 素不相识 | 247 |

| | |
|---------------|-----|
| 砥节奉公 | 247 |
| 捐躯报国 | 248 |
| 桃李满天下 | 248 |
| 桃李不言，下自成蹊 | 248 |
| 乘人之危 | 249 |
| 率马以骥 | 250 |
| 精疲力尽 | 250 |
| 断头将军 | 251 |
| 鞠躬尽瘁，死而后已 | 251 |
| 箪食瓢饮 | 252 |
| • 巧谏高论篇 • | |
| 危如累卵 | 254 |
| 众怒难犯 | 254 |
| 众志成城 | 255 |
| 自不量力 | 255 |
| 名正言顺 | 256 |
| 名高难副 | 256 |
| 名列前茅 | 256 |
| 安然无恙 | 257 |
| 安于故俗 | 257 |
| 安如泰山 | 258 |
| 交浅言深 | 258 |
| 好逸恶劳 | 258 |
| 防微杜渐 | 259 |
| 束缊请火 | 259 |
| 远水不救近火 | 260 |
| 困兽犹斗 | 260 |
| 坚甲利兵 | 261 |
| 言归于好 | 261 |
| 言犹在耳 | 262 |
| 饮鸩止渴 | 262 |
| 尾大不掉 | 263 |

| | | | |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 事半功倍 | 263 | 锐不可当 | 279 |
| 取长补短 | 264 | 强弩之末 | 280 |
| 抱薪救火 | 264 | 蜗角虚名 | 280 |
| 英雄无用武之地 | 265 | 缘木求鱼 | 281 |
| 明察秋毫 | 265 | 嫁祸于人 | 281 |
| 狐假虎威 | 266 | 箪食壶浆 | 282 |
| 金城汤池 | 266 | 箭在弦上 | 282 |
| 彼众我寡 | 267 | 螳螂捕蝉 | 282 |
| 变生肘腋 | 267 | 鹬蚌相争 | 283 |
| 居安思危 | 268 | 一傅众咻 | 283 |
| 相敬如宾 | 268 | 一蟹不如一蟹 | 284 |
| 背道而驰 | 269 | 一木破天 | 284 |
| 畏天知命 | 269 | 千岩万壑 | 284 |
| 临渴掘井 | 270 | 亡羊补牢 | 285 |
| 秋风扫落叶 | 270 | 子虚乌有 | 285 |
| 前车之鉴 | 271 | 己所不欲，勿施于人 | 286 |
| 前事不忘，后事之师 | 271 | 不足回旋 | 286 |
| 将欲取之，必先与之 | 272 | 五十步笑百步 | 286 |
| 捕风捉影 | 272 | 牛鬼蛇神 | 287 |
| 积羽沉舟 | 273 | 分道扬镳 | 287 |
| 宾至如归 | 273 | 火树银花 | 287 |
| 宴安鸩毒 | 273 | 引而不发 | 288 |
| 谈何容易 | 274 | 白驹过隙 | 288 |
| 掩目捕雀 | 274 | 当务之急 | 288 |
| 流血千里 | 275 | 老生常谈 | 289 |
| 捷足先登 | 275 | 半途而废 | 289 |
| 虚欹满覆 | 276 | 杀鸡焉用牛刀 | 289 |
| 犁庭扫闾 | 276 | 各得其所 | 290 |
| 甜言蜜语 | 276 | 名落孙山 | 290 |
| 深谷为陵 | 277 | 抛砖引玉 | 290 |
| 跖犬吠尧 | 277 | 别有天地 | 291 |
| 弹丸之地 | 278 | 别开生面 | 291 |
| 骑虎难下 | 279 | 舍我其谁 | 292 |
| 筚路蓝缕 | 279 | 空穴来风 | 292 |

| | | | |
|-----------|-----|--------|-----|
| 卷土重来 | 293 | 玉汝于成 | 306 |
| 始作俑者 | 293 | 目不窥园 | 307 |
| 昭然若揭 | 294 | 业精于勤 | 307 |
| 待价而沽 | 294 | 乐此不疲 | 308 |
| 举一反三 | 294 | 发愤图强 | 308 |
| 顿开茅塞 | 295 | 百闻不如一见 | 308 |
| 兼听则明，偏信则暗 | 295 | 死里求生 | 309 |
| 脱胎换骨 | 295 | 行尸走肉 | 309 |
| 欲罢不能 | 296 | 励精图治 | 309 |
| 欲速则不达 | 296 | 投笔从戎 | 310 |
| 庸人自扰 | 296 | 呕心沥血 | 310 |
| 望风披靡 | 296 | 忍辱负重 | 311 |
| 落井下石 | 297 | 枕戈待旦 | 311 |
| 楚弓楚得 | 297 | 卧薪尝胆 | 311 |
| 渴骥奔泉 | 298 | 金石为开 | 312 |
| 解弦更张 | 298 | 夜以继日 | 312 |
| 醉翁之意不在酒 | 299 | 实事求是 | 313 |
| 寞天寂地 | 299 | 废寝忘食 | 313 |
| 燕雀安知鸿鹄之志 | 299 | 面壁功深 | 313 |
| 愚不可及 | 300 | 临池学书 | 314 |
| | | 笃学好古 | 314 |
| | | 闻鸡起舞 | 314 |
| | | 席不暇暖 | 315 |
| | | 乘风破浪 | 315 |
| | | 脚踏实地 | 316 |
| | | 握发吐哺 | 316 |
| | | 勤能补拙 | 317 |
| | | 凿壁偷光 | 317 |
| | | 锲而不舍 | 317 |
| | | 墨突不黔 | 318 |
| | | 有志竟成 | 318 |
| | | 悬梁刺股 | 318 |
| | | 断齑画粥 | 319 |
| | | 磨穿铁砚 | 319 |

· 奋斗践行篇 ·

| | |
|-----------|-----|
| 一身两役 | 302 |
| 一家之言 | 302 |
| 不入虎穴，焉得虎子 | 302 |
| 九牛一毛 | 303 |
| 万人之敌 | 303 |
| 小心翼翼 | 304 |
| 不甘雌伏 | 304 |
| 天罗地网 | 304 |
| 韦编三绝 | 305 |
| 尺璧寸阴 | 306 |
| 手不释卷 | 306 |

| | | | |
|------------------|-----|---------|-----|
| 燃糠自照 | 320 | 全无心肝 | 334 |
| 囊萤映雪 | 320 | 众叛亲离 | 335 |
| · 五行劣迹篇 · | | | |
| 人面兽心 | 322 | 求田问舍 | 335 |
| 口蜜腹剑 | 322 | 吮痈舐痔 | 335 |
| 千人所指 | 323 | 作威作福 | 336 |
| 尸位素餐 | 323 | 含沙射影 | 336 |
| 飞扬跋扈 | 324 | 坐观成败 | 336 |
| 飞鹰走狗 | 324 | 玩火自焚 | 337 |
| 不伦不类 | 324 | 穷兵黩武 | 337 |
| 不寒而栗 | 325 | 幸灾乐祸 | 338 |
| 不学无术 | 325 | 招摇过市 | 338 |
| 不知人间有羞耻事 | 326 | 贪生怕死 | 339 |
| 不可胜数 | 326 | 贪得无厌 | 339 |
| 天崩地坼 | 326 | 狗尾续貂 | 339 |
| 无以复加 | 327 | 怙恶不悛 | 340 |
| 无功受禄 | 327 | 指鹿为马 | 340 |
| 专横跋扈 | 328 | 草菅人命 | 341 |
| 予取予求 | 328 | 城狐社鼠 | 341 |
| 为虎作伥 | 329 | 冒天下之大不韪 | 342 |
| 出尔反尔 | 329 | 食日万钱 | 342 |
| 只许州官放火，不许百姓点灯 | 329 | 信口雌黄 | 343 |
| 乐不思蜀 | 330 | 亭亭玉立 | 343 |
| 生吞活剥 | 330 | 骇人听闻 | 343 |
| 饥附饱飏 | 331 | 恶贯满盈 | 344 |
| 包藏祸心 | 331 | 笑里藏刀 | 344 |
| 鸟尽弓藏 | 332 | 唯利是图 | 345 |
| 市无二价 | 332 | 眼中之钉 | 345 |
| 奴颜婢膝 | 333 | 祸从天降 | 346 |
| 死有余辜 | 333 | 趋炎附势 | 346 |
| 同流合污 | 333 | 罄竹难书 | 347 |
| 伤风败俗 | 334 | 微文深诋 | 347 |
| | | 蝇营狗苟 | 347 |
| | | 横行霸道 | 348 |
| | | 暗箭伤人 | 348 |